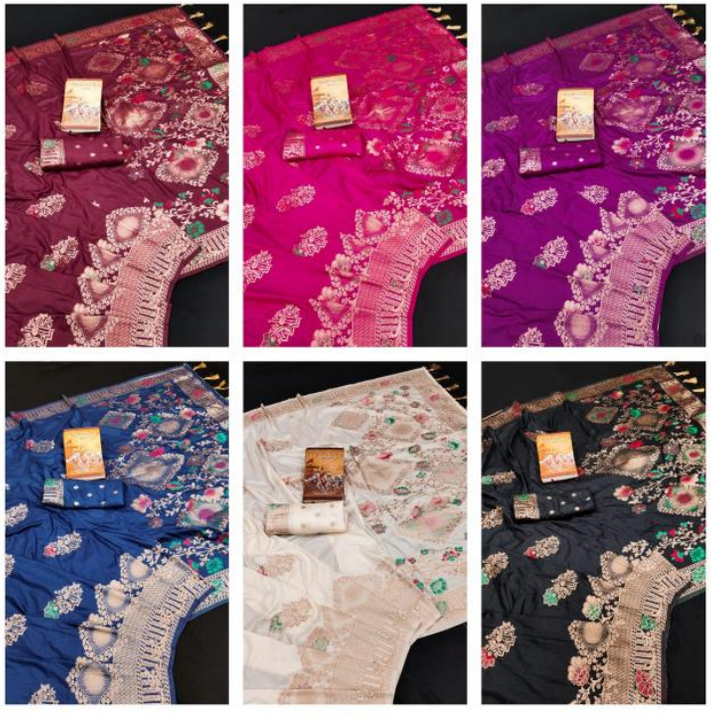

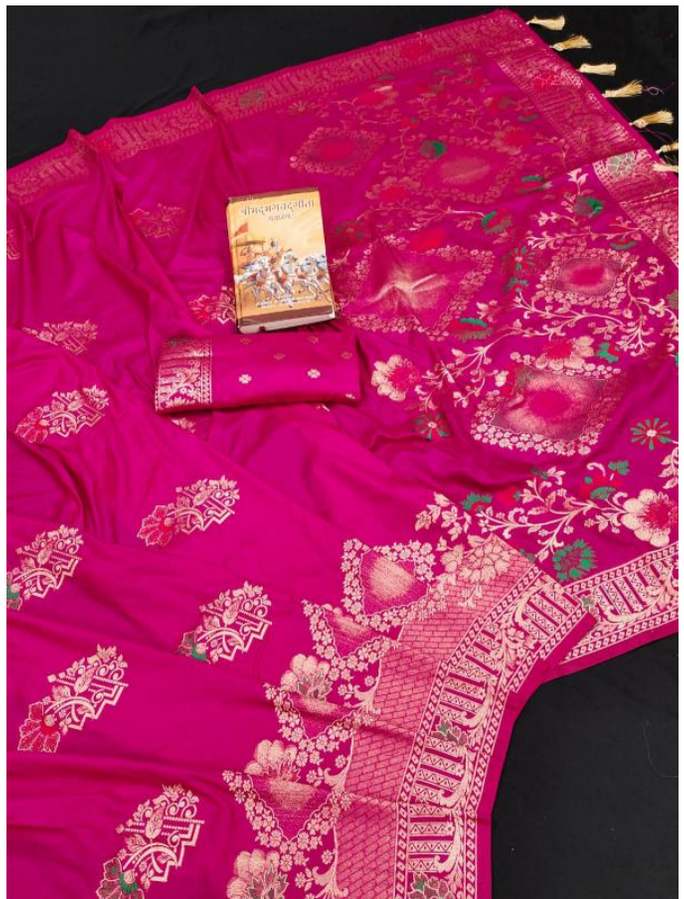

श्रीमद्भगवद्गीता
यथारूप